सत्य और अहिंसा का मार्ग ही श्रेयस्कर है

भुवनेश्वर से पुरीधाम जाने के रास्ते में 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ध्वली शांति स्तूप का 45वाँ स्थापना दिवस 29 अक्तूबर को देश–विदेश के सैकड़ों बौद्ध भिक्षुओं एवं भुवनेश्वर के जाने माने इतिहासकारों, बुद्धिजीवियों, बौद्ध धर्म के अनुयायियों एवं साहित्यकारों की उपस्थिति में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर बौद्ध धर्म के जाने माने विद्वान, प्रचारक और संप्रति ओडिशा महाबोधि सोसायटी के अध्यक्ष डॉ. बिमलेन्दु महंती द्वारा लिखित अंग्रेजी पुस्तक 'ध्वलीः पास्ट एंड प्रेजेंट' का भी लोकार्पण हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि भुवनेश्वर के माननीय सांसद डॉ. प्रसन्न कुमार पाटशाणी, सम्मानित अतिथि कीट–कीस के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत, प्रो. सूर्य नारायण मिश्र एवं मंचासीन राजगीर के मुख्य बौद्ध भिक्षु माननीय टी. ओकोनोगी और वर्धा के मुख्य बौद्ध भिक्षु माननीय एम. असई द्वारा संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ बौद्ध सूत्रपाठ से हुआ। समारोह के मुख्य आकर्षण बौद्ध गुरु परम पूज्य नीचीदात्सु फुजी जी थे, जिन्होंने अपने संदेश में सभी को सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलने का पावन संदेश दिया। डॉ. अच्युत सामंत की ओर से देश–विदेश से पधारे सभी बौद्ध भिक्षुओं का स्वागत कीट–कीस परिपाटी द्वारा किया गया। डॉ. सामंत ने बौद्ध गुरु का अभिनंदन उनके द्वारा स्थापित विश्व के सबसे बड़े आदिवासी आवासीय विद्यालय भुवनेश्वर के बच्चों द्वारा हस्त निर्मित पेंटिंग भेंटकर किया।

पुस्तक के लेखक डॉ. बिमलेन्दु महंती ने अपनी अनुभूति में यह बताया कि छठी सदी बी.सी में इस शांति स्तूप के नीचे श्रीलंका से लाकर भगवान बुद्ध की अस्थी के कुछ अंश रखे गये हैं। डॉ. महंती ने बताया कि वे अब तक 16 ओडिया पुस्तकें और 9 अंग्रेजी पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं, जिनमें उनकी 6 पुस्तकें बौद्ध धर्म पर हैं। समारोह के सम्मानित अतिथि राजनीति विज्ञान के प्रो. सूर्यनारायण मिश्र ने बताया कि भगवान बुद्ध की सत्य और अहिंसा की शिक्षा जन–जन के लिए अनुकरणीय हैं। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. प्रसन्न कुमार पाटशाणी ने बताया कि ध्वली बौद्ध शांति स्तूप ओडिशा की एक ऐसी धरोहर है जिसके विषय में पूरे विश्व को जानने की जरूरत आज भी है।

डॉ. अच्युत सामंत ने बताया कि वे अपना व्यक्तिगत जीवन एक नेक, सरल और सत्य पर आधारित जीते हैं। सत्य का मार्ग सबसे उत्तम मार्ग है और अहिंसा का पालन मानव जीवन की सबसे बड़ी सफलता है। प्रत्येक मनुष्य को एक अच्छा इंसान पहले बनना चाहिए और हमेशा अहिंसा के मार्ग पर चलना चाहिए। डॉ. सामंत ने बताया कि अहिंसा का अर्थ जीव हिंसा को रोकना मात्र कदापि नहीं है अपितु अहिंसा का तात्पर्य विचारों, कार्यशैली और आचरण–व्यवहार की शुद्धता है। उनके अनुसार भगवान बुद्ध जिस प्रकार से एक राजकुमार से

एक बौद्ध भिक्षु बन गये थे वह उनका आत्मविश्वास था कि यही जीवन सच्चा जीवन है। उन्होंने सत्य और अहिंसा के मार्ग पर आजीवन चलने का व्रत लिया और उसे निभाया भी।

डॉ. सामंत ने बताया कि बौद्ध धर्म कोई विचार नहीं, कोई वाद नहीं, कोई सिद्धांत नहीं अपितु एक सच्चा जीवन दर्शन है जिसे हम सबको अपनाना चाहिए। ओडिशा प्रदेश इस बात को लेकर गौरव का अनुभव करता है कि जिस ओडिशा प्रदेश से जगन्नाथ भगवान अपने दर्शन मात्र से शांति, एकता और मैत्री का पावन संदेश देते हैं, उसी धरा–धाम पर चण्ड– अशोक भी धर्म–अशोक बनकर और बौद्ध धर्म को अपनाकर पूरे विश्व को शांति और अहिंसा के मार्ग पर चलने का पावन संदेश देता है।